स्वतंत्र भारत में आधुनिक उद्योगों के विकास में पंडित जवाहर लाल नेहरू का योगदान

डॉ0 मंजय कुमार मधुप*

आधुनिक भारत के निर्माण में पंडित जवाहर लाल नेहरू का महत्पवपूर्ण योगदान है। उन्हें आधुनिक भारत का निर्माण भी कहा जाता है। नेहरू स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री और एक महान् नेता थे। सन् 1938 में काग्रेंस ने एक नेशनल प्लानिंग कमेटी का गठन किया था जिसका काम आजादी के देश की आर्थिक विकास का खाका खींचना था। इस कमेटी की अध्यक्षता हवाहर लाल नेहरू ने की थी।

जवाहरलाल नेहरू ने जिस प्रकार देश की आर्थिक प्रगति और विकास में अपना योगदान दिया उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उनको अर्थजगत का बहुत अधिक ज्ञान था और एक मंझे हुए अर्थशास्त्री की तरह उन्होंने भारत के आर्थिक विकास में अपना भरपूर योगदान दिया। उन्होंने देश की आर्थिक प्रगति एवं विकास के सिद्धान्त को नया मोड़ दिया। सन् 1920 तक जैसा वे स्वयं स्वीकार करते है कि उद्योगों एवं कषषि मजदूरों की दयनीय दशा से वे पूर्ण रूप से अनभिज्ञ थे एवं उनका राजनीतिक दर्षष्टिकोण पूंजीवादी था।[1]

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भिलाई में देश की प्रथम रेल और स्ट्रक्चरल मिल का उद्घाटन किया था जो कि भारत के आर्थिक विकास के दर्षष्टिकोण से सकारात्मक था। स्वतंत्रता के बाद आर्थिक स्वराज्य को प्राप्त करना उनका प्रथम उद्देश्य था। वह इस बात को अच्छी तरह जानते थे कि उद्योगों के विकास के बिना देश में मजबूत आर्थिक ढांचा तैयार नहीं किया जा सकता। इसलिए उन्होंने योजनाकाल के आरम्भ में भारी उद्योगों के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। इस्पात उद्योग उनकी नजर में आर्थिक क्षमता का प्रतीक था जो कि किसी भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण होता है। अनेक महत्वपूर्ण भारी उद्योगों का विकास इस्पात पर ही टिका हुआ है, जैसे भारी इंजीनियरिंग, रेल, पुल निर्माण आदि। आज देश भारी उद्योगों के क्षेत्र में काफी आत्मनिर्भर है। यह नेहरू के द्वारा आरम्भ की गई उन योजनाओं का फल है जो उन्होंने पचास के दशक में आरम्भ की थी। इस दशक में राउरकेला, दुर्गापुर और भिलाई में इस्पात के कारखाने लगाये गए।[2]

जवाहरलाल नेहरू ने उद्योगों के सन्दर्भ में आर्थिक विचारों को 1948 और 1956 की औद्योगिक नीतियों के रूप में प्रस्तुत किया। उनको इस बात का अच्छी प्रकार से ज्ञान था कि भारत जैसे पिछड़े देश में जहाँ पूंजी एवं विज्ञान व तकनीकी का अभाव है, विकास की प्रक्रिया को निजी उद्यमियों पर नहीं छोड़ा जा सकता। इसलिए औद्योगिक नीतियों में उन्होंने बड़े आधारभूत एवं महत्वपूर्ण उद्योगों के विकास की जिम्मेदारी अपने उपर ली और इस प्रकार भार में उद्योगों का प्रादूर्भाव हुआ।[3]

भारत के 40 करोड़ लोगों के विकास को ध्यान में रखते हुए उन्होंने इस बात पर बल दिया था कि औद्योगिक विकास का आधार विज्ञान एवं तकनीक को बढ़ावा देकर ही सम्भव है। उनका विचार था कि भारत में विकास के दर्षष्टिकोण से जो भी योजना बनाई जायेगी वह विज्ञान एवं तकनीक तथा उद्योगों पर आध ाारित होगी। उन्होने यह भी स्पष्ट कर दिया था, कि जो भी औद्योगिक नीति बनाई जायेगी उसका विशेषज्ञ सर्वेक्षण करते रहेंगे और समय–समय पर उसकी समीक्षा करना भी उनका दायित्व होगा। इससे उत्पादन व रोजगार आदि में समन्वय बना रहेगा।[4]

जवाहरलाल नेहरू निजी उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र में लेने के विरोधी थे। उनका उद्देश्य था कि कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्र सरकार के लिए सुनिश्चित कर दिये जाएं जिससे सार्वजनिक क्षेत्र में उनके विकास की पूरी गुंजाइश रहे। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए निजी क्षेत्र में औधोगिक विकास के लिए उद्योगपतियों को पूरा अवसर और स्वतंत्रता दी जायेगी, जिससे उनके उद्योग खूब फले–फूले, माल का भरपूर उत्पादन हो ताकि यह क्षेत्र देश के निर्माण व विकास में सहायक सिद्ध हो सकें। जवाहरलाल नेहरू ने भारी उद्योगों के विकास पर बहुत अधिक बल दिया जबकि वे भारत में कुटीर उद्योगों के उतने पक्षधर नहीं थे।[5]

उनका विश्वास था कि भारी उद्योग ही औद्योगिक विकास का मूल आधार हो सकते है। इस कारण उन्होने बड़े–बड़े इस्पात के कारखानों को स्थापित करने की योजना बनायी और उसे सत्य कर दिखाया। जब वो इस्पात के कारखानों की योजना बना रहे थे तब अमेरिका जैसे बड़े देश ने उनके सामने प्रस्ताव रखा कि भारत को बड़े इस्पात के कारखाने लगाने की क्या आवश्यकता है। कच्चा लोहा देकर वह अमेरिका से जितनी और जिस प्रकार की आवश्यकता हो, तैयार इस्पात का बना माल ले सकता है। जवाहरलाल नेहरू ने अमेरिका के इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उनके द्वारा उठाये गये कदम ने आज यह प्रमाणित कर दिया है कि भारत की गिनती इस्पात उत्पादन में संसार के बड़े देशों में की जाती है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा थाः–

''माल बनाने के लिए मशीनें चाहिए, लेकिन जो मशीनें माल बनाती है, उन मशीनों के लिए मजबूत इस्पात की आवश्यकता पड़ती है। मैं नहीं चाहता कि भारत

***ग्राम–नौला, पो0–डरहर थाना–नवहात्ता जिला–सहरसा**

उद्योग, इस्पात अथवा किसी भी क्षेत्र में किसी दूसरे देश पर निर्भर रहे या उसका परामुखी बना रहें।[6]

नेहरू की दूरंदेशी व प्रयासों के कारण ही आज छोटी से छोटी और बड़ी से बड़त्री वस्तुएं देश में ही निर्मित की जा रही है। देश में बड़े–बड़े कारखाने है जिनमें हजारों, सैंकड़ों व्यक्तियों को रोजगार के अवसर प्राप्त हुए है। उनके कार्यकाल में परम्परागत उद्योगों को तो अविस्मरणीय विकास दिया।[7]

उनके द्वारा उठाये गये कदमों का समस्त भारत में विरोध भी हुआ और सराहना भी की गई। उनकी आलोचना करते हुए बड़े–बड़े उद्योगपतियों ने उनके इन विचारों से मतभेद किया। लेकिन उन्होंने यह ठान लिया था कि साधारण जनता के हितों को ध्यान में रखते हुए ही निर्णय लिए जायेंगे। इस्पात, कोयला और तेल–इन तीनों उद्योगों को सार्वजनिक क्षेत्र मं सम्मिलित किया गया। यदि नेहरू अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए केन्द्र और राज्य सरकारों ने भारी औद्योगिक तथा अन्य योजनाओं को बड़ी संख्या में राज्य नियंत्रण के अधीन ले लिया था। उन्होंने एक अन्य कारगर कदम जो उठाया उससे बड़े–बड़े उद्योगों के विकास को सहायता मिली। उन्होंने व्यक्तिगत स्वामित्व समापत कर उसे सरकार के नियन्त्रण में ले लिया।[8] उन्हांने देश में हो रहे उत्पादन को प्रत्येक वर्ष बढ़ाने पर भी ध्यान केन्द्रित किया। तत्कालीन परिस्थितियों की समीक्षा की जाये तो अनुमान लगाना सरल होगा कि बड़े उद्योगों के विकास के बिना भारत के विकास की बात करना व्यर्थ था। जवाहरलाल नेहरू औद्योगीकरण विकेन्द्रीकरण में विश्वास करते थे। वह समझते थे कि भारत में जहॉ तक प्रश्न लघु व मध्यम वर्गीय उद्योगों का है तो उन पर साधारण जनता का अधिकार होना चाहिए। लेकिन प्रश्न यदि बड़े उद्योगों का हो तो उस पर एकछत्र राज्य का अधिकार होना चाहिए।[9] उन्होंने जिन बड़े–बड़े उद्योगों का विकास किया वे निम्नलिखित हैः– (1) सिन्दरी फर्टीलाइजर्स एण्ड केमिकल्स प्राइवेट लिमिटेड (2) नांगल फर्टीलाइजर्स एण्ड केमीकल्स प्राइवेट लिमिटेड (3) हैवी इलेक्ट्रिकल्स प्राइवेट लिमिटेड (4) हिन्दुस्तान मशीन टूल्स प्राइवेट लिमिटेड (5) हिन्दुस्तान केबिल्स प्राइवेट लिमिटेड (6) हिन्दुस्तान एन्टीबायोटिक्स प्राइवेट लिमिटेड (7) हिन्दुस्तान इन्सेक्टीसाइड्स प्राइवेट लिमिटेड (8) नेशनल इंडस्टियल डिवेलपमेंट कॉरपोरेशन प्राइवेट लिमिटेड (8) एक्सपोर्ट रिस्क्स इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड, इत्यादि।

प्रथम पंचवर्षीय योजना के आरम्भ में देश में केवल 5 लोक उपक्रम थे, जबकि वर्तमान समय में इनकी संख्या 250 से भी अधिक है, जिसमें 50,000 बरोड़ रूपये से अधिक का पूंजी निवेश हुआ था। यदि इनमें अन्य राज्यों को मिला लिया जाए तो इनका कुल पूंजी निवेश 75000 करोड़ रूपये से अधिक हो जाता है।

उदाहरण के रूप में बिहार में कुल 50 राजकीय लोक उपक्रम स्थापित किये गए, जिसमें लगभग 2500 करोड़ रूपये का पूंजी निवेश हुआ था। वहीं उत्पादन के दषष्टिकोण से कोयले का 98 प्रतिशत, लिग्नाइट का 100 प्रतिशत, पेट्रोल का 100 प्रतिशत, इस्पात का 75 प्रतिशत, तांबे का 100 प्रतिशत, जिंक का 85 प्रतिशत तथा उर्वरक का लगभग 48 प्रतिशत सार्वजनिक क्षेत्र के माध्यम से उत्पादन होता था। द्वितीय पंचवर्षीय योजना में कोयला भंडार व अन्य भारी उद्योगों के विकास पर बल दिया गया था। 1955 से जी0एस0आई0 ने कोयला भंडार की खोज में कार्य आरम्भ किया। आर0बी0एम0 ने भी सितम्बर 1955 से मध्य प्रदेश के कोरबा क्षेत्र में ड्रिलिंग चालू कर दी। द्वितीय योजनाकाल के अंत में आई0बी0एम0 की 49 ड्रिल कार्य कर रहीं थीं जो बोकारों, करनपुरा, तालचर, कोरबा, झिलमिली, बिसरामपुर, चिरमिरि, गिरीडीह तथा सोनहाट में कोयले के नये भण्डारों का पता लगाने में सफल हुई। एन0सी0डी0सी0 जो सन् 1958 में स्थापित हुई, ने कोयला भंडारों की विस्तषत जानकारी का काम चालू किया। उसके पास 15 ड्रिल मशीनों थीं, जिससे झरिया, तालचर, दक्षिण करनपुरा, कोरबा तथा सोनहाट क्षेत्रों में कोयला भंडारों की विस्तषत जानकारी प्रापत करके नए कोयला खदान खोलने में सफलता प्राप्त हुई। तत्कालीन भारतीय सरकार की इस सफलता ने कोयले की समस्या ने न केवल भारत को छुटकारा दिलाया बल्कि विदेशों में भी भारत से कोयला अच्छी कीमतों पर बेचा जाने लगा। इस सन्दर्भ में कोई सन्देह नहीं है कि जवाहरलाल नेहरू ने जो योजनाएं बनायीं, उनसे देश को मजबूत औद्योगिक ढ़ाचा प्राप्त हुआ।

जवाहरलाल नेहरू के प्रधानमंत्री कार्याकल में ट्रांसर्पोटेशन उद्योग, पर्यटन उरद्योग, कांन्ट्रैक्टिंग, वाणिज्य तथा फिनिस्ड क्षेत्रों मं भी तीव्रतर विकास और विस्तार हुआ। इस क्षेत्र के प्रसाद से नियोजन के अवसरों तथा राष्ट्रीय आय में वषद्धि पूंजी निवेश, अर्न्तक्षेत्रीय विषमताओं में कमी, पिछड़े क्षेत्रों का विकास, विभिन्न भारी व लघु उद्योगों के विकास को भी बहुत बल मिला और गरीबी कम करके भारत को तीव्रतर विकास की ओर अग्रसर करने हेतु पंडित नेहरू ने भारी तथा अन्य उद्योगों के क्षेत्र में मुख्य इंजन का कार्य किया था। उन्होंने भारतीय औद्योगिक जगत को नई राहें प्रदान की थीं। विकास की इस मंजिल पर पहूँचने के लिए यह आवश्यक था कि भारत में आर्थिक व सामाजिक विषमता का अन्त किया जाता और समाज में धन का न्यायपूर्ण वितरण किए जाने को वरीयता दी जाती। धन की वितरण प्रणाली को न्यायपूर्ण बनाने के पूर्व जवाहरलाल नेहरू के सामने एक बहुत बड़ी बाधा थी। वह बाधा यह थी कि देश में उत्पादन ही पर्याप्त नहीं था तो फिर न्यायपूर्ण वितरण किस वस्तु का किया जाता। वितरण तभी न्यायपूर्ण हो सकता था जब उत्पादन बढ़ता और उत्पादन वषद्धि के लिए देश का औद्योगीकरण

करना आवश्यक था। इसी बात को ध्यान में रखकर उनके नेतष्त्व में भारत सरकार ने स्वतन्त्र भारत की प्रथम औद्योगिक नीति की 1948 में घोषणा किया गया था। उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था से तात्पर्य यह बताया थाः–

''औद्योगिक क्षेत्र में निजी उद्योग और सार्वजनिक उद्योग साथ–साथ चल सकते है। हमारा उद्देष्य भारी उद्योगों को बड़े पैमाने पर बढ़ावा देना है क्योंकि इसके बिना भारत के विकास और उद्योग क्षेत्र की प्रगति के बारे में बात करना व्यर्थ है।[10]

पंडित जवाहरलाल नेहरू के नेतष्त्व में तत्कालीन भारत सरकार का यह दष्ढ़ विश्वास था कि पूर्ण राष्ट्रयकरण उन देशों के लिए तो लाभदायक हो सकता था, जहाँ राज्य के पास पर्याप्त साधन हों। परन्तु भारत जैसे विकासशील, अल्पविकसित, साधनहीन, राष्ट्र के लिए यह व्यवस्था अधिक उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकती, क्योंकि यहॉ वित्तीय और तकनीकी साधन बड़े सीमित थे। उनके अनुसार मिश्रित अर्थव्यवस्था समय की मांग थी और इस अर्थव्यवस्था से ही सम्भव था कि निजी उद्योग भी राष्ट्रीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते थे। मिश्रित अर्थव्यवस्था के आधार पर ही भारत के समस्त उद्योगों को सार्वजनिक और व्यक्तिगत क्षेत्र में बांटा गया था। 1948 में इस सन्दर्भ में जवाहरलाल नेहरू ने यह प्रतिपादित किया थाः–

''समय और परिस्थितियों की मांग यह है कि दोनों क्षेत्र आपसी सहयोग से भारत के विकास के लिए साथ–साथ कार्य करें। यदि दोनों क्षेत्रों में कोई भी समनव्य नजर आया तो भारत बहुत जलदी आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर होगा।[11]''

जवाहरलाल नेहरू की प्राथमिकता यह थी कि सार्वजनिक क्षेत्र में उन उद्योगों को लाया जाए, जिन पर सार्वजनिक हित की दष्ष्टि से राज्य का स्वामित्व और नियन्त्रण रखना आवश्यक था तथा इन पर व्यक्तिगत अधिकार बने रहने में कोई हानि नहीं समझी गयी थी। उनके नेतष्त्व में तत्कालीन भारतीय सरकार ने यह निश्चय किया था कि देश के प्रतिरक्षा सम्बन्धी उद्योगों का तथा आधारभूत व भारी उद्योगों को सार्वजनिक खेत्र में रखा जाना चाहिए। भारी उद्योगों में जो प्रतिरक्षा महत्व के नहीं थे, और जिन पर व्यक्तिगत स्वामित्व था उन्हें उसी प्रकार रहने दिया गया।

इस सम्बन्ध में नये कारखानों की स्थापना का अधिकार राज्य के पास सुरक्षित रखा गया था। 1948 में औद्योगिक नीतियों में सरकारी स्वामित्व केवल तीन उद्योगों तक सीमित रखा गया थाः (1) गोला बारूद, (2) अणुशक्ति तथा (3) रेलवे। छः अन्य उद्योगों में नये संस्थान प्रारम्भ करने का अधिकार सकरार ने अपने पास रखा था, जो कि इस प्रकार थे। इन निजी कारखानों का राष्ट्रीयकरण कम

से कम 10 वर्ष तक स्थगित कर दिया गया था। शेष औद्योगिक क्षेत्र सामान्यतः निजी उद्योगों के लिए छोड़ दिया गया था।

यह कहा जा सकता है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने उद्योगों के विकास के लिए प्रत्येक क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य किए। उद्योगों को बढ़ावा देने के पीछे जवाहर लाल नेहरू का मुख्य उदेश्य समाज में व्याप्त सामाजिक समसयाओं व बेरोजगारी का सकुशल उपाय तलाशना था उनके द्वारा आरम्भ की गई औद्योगिक नीतियों पर देश का सर्वागीण विकास हुआ। इस संदर्भ में यह भी कहा जाने लगा कि भारत यूरोप और अमेरिका से उद्योग धंधो की स्थापना के क्षेत्र में एक शताब्दी पीदे रहकर भी आज वह संसार दुसरे नम्बर पर पहूँच गया है और वह बहुत जल्द ही विश्व के अग्रणी देशों मं अपना नाम दर्ज कराने में सफल भी हो गया।

संदर्भ ग्रंथों कि सूचीः–

1. जवाहर लाल नेहरू के भाषणः– प्रकाशन विभाग नई दिल्ली 1976 पृ. 113–15
2. आनंद शंकर शर्माः–दिव्य पुरूष नेहरू, प्रभात प्रकाशन नई दिल्ली 1966, पृ. 52–53
3. आज हिन्दी दैनिकः–कानपूर से प्रकाशित 20 मार्च 1956, पृ. 02
4. ज्ञान चन्दः–सोशलिस्ट ट्रासफॉरमेशन ऑफ इंडियन एकोनोमीःए स्ट्रडी इन सोशल ऐनेलिर्सिज, पृ. 135
5. आनंद शंकर शर्माः–पूर्वोक्त, पृ. 53
6. जवाहर लाल नेहरू के भाषणः–पूर्वोक्त, पृ. 89–90
7. डॉ0 कूलदीप श्रीवास्तवः– पंडित नेहरू एक बहुआयामी व्यक्तित्व, अमन प्रकाशन कानपुर 1992, पृ. 40–41
8. डॉ0 वेद प्रकाश शर्माः–जवाहर लाल नेहरूः एक समाजवादी दार्शनिक पृ. 134
9. सुनील गुहाः–आजादी के ग्यारहवॉ वर्ष, 1957–58, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी, पृ. 73–74
10. वीरेन्द्र सिंहः–जवाहर लाल और औद्योगिक व विज्ञान चेतना, नवीन प्रकाशन, मम्बई 1989, पृ. 48–50
11. वही